thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : ०५ ● ३ फरवरी, २०१५ माघ पूर्णिमा, सम्वत् २०७१ ● दयानन्दाब्द १६० वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११५

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का दो दिवसीय वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

अधिवेशन में कन्या भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, साम्प्रदायिकता, किसानों की समस्याओं के विरूद्ध सशक्त आवाज उठाने का संकल्प लिया गया

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का वार्षिक अधिवेशन दिनांक २४ एवं २५ जनवरी २०१५ को ५-मीराबाई मार्ग लखनऊ के सभागार में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन में प्रदेश के सभी जनपदों की आर्य समाजों से आये आर्य प्रतिनिधियों ने भारी संख्या में भाग लेकर अधिवेशन को सफल बनाया।

दोनों ही दिन प्रातः ८ बजे से राष्ट्रभृत यज्ञ स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, मंत्री सभा के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ।

प्रथम दिवस यज्ञ के अनन्तर ओ३म् ध्वजा का उत्तोलन सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने किया। ध्वजारोहण के बाद जन समूह को सम्बोधित करते हुये उन्होंने कहा कि आर्यजन संगठित रूप में महर्षि दयानन्द के उद्देश्यों को पूर्ण करने का संकल्प लें। आज धर्म पूरी तरह से नष्ट हो रहा है, ढोंग पाखण्ड बढ़ रहा है। हम उनके विरूद्ध जनभावना बनाने के लिए आर्य समाज आन्दोलन को तेज करें। उद्बोधन के बाद पहले दिन अन्तरंग सभा का अधिवेशन हुआ जिसमें अन्तरंग सभा में आये सभी विषयों पर सर्वसम्मति से निर्णय लिये गये।

भोजनोपरांत दोपहर २ बजे से सभा प्रधान जी की अध्यक्षता में खुला अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। सभा प्रधान जी ने खुले अधिवेशन का प्रारम्भ करते हुये कहा कि हम प्रदेश के सभी अंचलों से इस भीषण शीत लहरी में भी आये सभी आर्य प्रतिनिधियों का धन्यवाद करते हैं। हम सभी आर्य नर-नारी महर्षि दयानन्द के स्वप्नों का भारत बनाने के लिए "मनसा वाचा कर्मणा" संन्नद्ध हो। हमें युवा पीढ़ी को अपने साथ जोड़ना और आगे बढ़ाना है। आज देश में ढोंग, पाखण्ड, नारी उत्पीड़न, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज हत्यायें बढ़ रही है। हमारा देश कृषि प्रधान देश कहा जाता है। परन्तु आज आधुनिकता के प्रवाह के बढ़ने के कारण किसान उपेक्षित हैं, उनके भूखे मरने के भी समाचार आये दिन सुनने को मिलते है। धर्म का आवरण ओढ़ कर साम्प्रदायिक विद्वेष बढ़ाने के विविध उपाय अपना कर देश की प्रगति में बाधा डाली जा रही है। देश में मीडिया के माध्यम से अन्य सभी राजनीतिक, सामाजिक, तथाकथित धार्मिक संगठन अपना अपना प्रचार कर रहें हैं परन्तु हम इसमें पीछे हैं।

हम सभी आर्यो पर महर्षि दयानन्द ने सभी बुराइयों से रहित सुख समृद्धि से पूर्ण राष्ट्र बनाने का दायित्व सौंपा है। परन्तु हम उस दायित्व को सही रूप में निभाने में उदासीन से हैं। हम आने वाले वर्ष में आन्दोलन को तीव्र गति से चलाने का संकल्प लें। आज ढोंग व पाखण्ड पहले से भी ज्यादा फैल रहा है। हमारे घरों में भी ढोंग पाखण्ड पैर जमाने लगा है। हम सावधान हो, सच्चे आर्य बनकर उन पाखण्डों से अपने घर-परिवार को दूर रखने के लिए कृत संकल्प हों। महर्षि दयानन्द अकेले थे परंतु उनकी निर्भीक आवाज ने हमें जगाया। हरिद्वार के महाकुम्भ के मेले में पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराकर पाखण्डियों को शास्त्रार्थ का चैलेन्ज किया था। अनेकों शास्त्रार्थ हुये जिनमें उनसे सभी परास्त हुयें।

आज आर्य समाज के सदस्यों की भारी तादाद है फिर भी पाखण्ड ढ़ोंग बढ़ रहा है इस पर जब विचार करेंगे तो हम पायेंगे कि महर्षि दयानन्द ने उन्नत भारत बनाने के लिए आर्य समाज की स्थापना एक आन्दोलन के रूप में की थी जब तक आन्दोलन तीव्र गति से चला हमारी प्रगति होती रही। परंतु जब आन्दोलन में शिथिलता आई तो बुराईयां बढ़ने लगी। हमें देश में पनपती सभी बुराइयों के विरूद्ध सशक्त आवाज उठाने के लिए आर्य समाज आन्दोलन को तेज करना है।

आर्य समाज आन्दोलन को और तेज गति से चलाने के लिए हमें मीडिया से सीधा सम्बन्ध बनाना होगा। जहां कोई कन्या भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, किसानों का उत्पीड़न, जैसी घटनाएं होती हैं। हमें वहां उसका सामूहिक रूप में विरोध करना है। सार्वजनिक स्थानों पर एकत्र होकर पहले हवन करें और फिर उस बुराई के विरूद्ध भाषण देकर समाज व सरकार को जगायें तथा सरकार को उसके विरूद्ध ज्ञापन भी दें। मीडिया में भी इस आन्दोलन की सूचना दें। समय-समय पर प्रेस वार्ता करने की व्यवस्था करें। मीडिया से सम्पर्क बढ़ेगा। इस प्रकार आन्दोलन में गति आयेगी।

दिनांक २५.१.२०१५ को प्रातः १० बजे से राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आरम्भ हुआ। जिसकी अध्यक्षता सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी ने की। जिसमें डा. भानु प्रकाश आर्य लखनऊ श्री वीरेन्द्र रत्नम मेरठ, डॉ. धीरज सिंह खुर्जा, श्री अरविन्द कुमार बुढ़ाना, श्री हेतराम सागर अमरोहा, श्री राजनाथ गोयल अमरोहा, श्रीमती आशा आर्या एवं तेज पाल आर्य ने राष्ट्र रक्षार्थ अपने अपने विचार रखें। इसके अतिरिक्त आर्य समाज संगठन, महिला उत्थान, युवा चरित्र निर्माण सम्मेलन भी हुये। जिसमें सर्वश्री कनक देव आर्य श्रीमती आशा आर्या, तेजपाल आर्य अमरोहा, श्री सुन्दर लाल आर्य हापुड़, श्री रमाशंकर आर्य केराकत जौनपुर, यतीन्द्र विद्यालंकार अमरोहा, पंकज जायसवाल प्रयाग, कालीचरण आर्य बुलन्दशहर, श्री बेचन सिंह उप प्रधान सभा, मिर्जापुर, श्री सत्यवीर शास्त्री, वी.पी.सागर, वीर सिंह भावुक, उदय आर्य श्याम बिहारी शास्त्री, मथुरा आदि ने अपने अपने विचार रखें। डॉ. भानु प्रकाश आर्य लखनऊ ने योग के चिन्तन, विषय पर गम्भीर प्रकाश डाला। आर्य वीरदल के क्रिया कलापों को सारे प्रदेश में सही रूप में फैलाने के लिए जहां आर्यवीर दल की शाखायें नहीं हैं वहां उनकी स्थापना पर जोर दिया गया।

अंत में अधिवेशन का समापन करते हुए सभा प्रधान जी ने सभी प्रतिनिधियों से कहा कि आप सभी आर्यजन आर्य समाज आन्दोलन को तीव्रता से चलाने के लिए नये उत्साह व उमंग से प्रतिबद्ध हों।

अधिवेशन के अनन्तर गरीबों व असहायों के लिए कम्बल वितरित किये गये एवं भोजनादि दिया गया। प्रतिनिधियों एवं आगन्तुकों को वार्षिक वृतान्त, बैग एवं पुस्तकें भी भेंट की गयी।

अधिवेशन के प्रथम दिन ६८ वर्षीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री शिवनारायण गुप्त ग्राम भगड़वा बहराइच का शाल उठाकर व माल्यार्पण कर सम्मान किया गया। श्री शिवनारायण गुप्त जी ने अपनी सम्पूर्ण अचल सम्पत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश को दान में देने की घोषणा की। उन्होंने यह भी इच्छा व्यक्त की कि उक्त जमीन पर साधकों और वानप्रस्थियों के लिए आश्रम का निर्माण कराया जाये। उक्त दान की प्रेरणा श्री शिव कुमार कौशल अंतरंग सदस्य सभा की विशेष प्रेरणा से प्राप्त हुयी। वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

सभा प्रधान जी ने उनकी भावना का सम्मान करते हुये उसे पूर्ण करने का आश्वासन दिया।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

विश्व का उत्थान वैदिक संस्कृति से ही सम्भव है।
संस्कृति ज्ञान के लिए संस्कृत अनिवार्य

आज हमारे देश की संस्कृति को पूरी तरह ध्वस्त करने का प्रयास बड़े जोर शोर से चल रहा है। भारत देश कभी विश्व का मार्ग दर्शक था। सभी विदेशी जिज्ञासु अपनी ज्ञान पिपासा को शान्त करने के लिए हमारे देश की ओर निहारते थे। यहां आते थे और जिज्ञासा पूर्ण करके तृप्त होते थे। चूँकि हमारे देश की संस्कृति वैदिक संस्कृति थी-जो सर्वांगीण उन्नति का मार्गदर्शन देती थी।

महाभारत काल के बाद वैदिक संस्कृति का स्वरूप विकृत होने लगा। वेद से रहित पुराणादि ग्रंथ हमारे धर्म ग्रंथ बन गये। फलतः ढोंग पाखण्ड को धर्म व संस्कृति माना जाने लगा। हमारी इन्हीं कमियों का लाभ उठाकर विदेशियों ने हमारे देश पर आक्रमण किया हमारी सम्पदा लूटी हमें अपना गुलाम बनाया। परंतु सर्वाधिक हानि अंग्रेजों ने पहुँचायी। वे बड़ी चालाकी से व्यापारी बनकर यहां आये हमारी सम्पदा लूटी हमें पराधीन बनाया और सदैव पराधीन रखने की भावना से लार्ड मैकाले ने अपनी शिक्षा व्यवस्था हमारी वैदिक शिक्षा पद्धति बदलकर पराधीन रखने वाली शिक्षा चलायी जिसमें हमें सदैव दास रखने की ही भावना है। सदैव रोजी रोटी और मकान की ही जुगाड़ लगाने में सारा जीवन समाप्त हो जाये। हम अन्य उन्नति के उपायों को सोच ही भी न सकें। पराधीन भारत में ही महर्षि दयानन्द का उदय हमारे उद्धार का मार्ग दर्शन देने के लिए हुआ था। उन्होंने पराधीनता के हर पहलू पर गम्भीर चिन्तन करके हमें बंधन मुक्त करके सुखी समृद्ध बनाने के लिए आर्य समाज की स्थापना की और कहा कि विदेशी शिक्षा, नारी उत्पीड़न, अशिक्षा, जन्मगत जाति भेद, ऊँच नीच की भावना और ढोंग पाखण्ड को धर्म समझ कर मानना ही हमारे पराभव का कारण है। उन्होंने कहा कि हम सभी आर्य (उत्तम मानव बनकर) राष्ट्रोत्थान के लिए सदैव जन जन में इस भावना को भरने के लिए आर्य समाज का आन्दोलन चलायें-जो आन्दोलन कभी भी शिथिल न पड़े। आर्य समाज आन्दोलन से-जन-जन से जागृति आई। स्वराज्य प्राप्ति की लालसा जगी, तीव्रगति से स्वराज्य आन्दोलन चला देश स्वाधीन हुआ। स्वाधीनता के बाद अपनी सरकार बनी अपना संविधान बना। सुखी समृद्ध राष्ट्र बनाने की लालसा में भौतिक उन्नति पर सम्पूर्ण ध्यान टिका दिया। हमारी भौतिक समृद्धि बहुत हुई परंतु पराधीन रखने की शिक्षा ही चालू रखने से हमारा नैतिक और चारित्रिक पराभव होने लगा। ढोंग-पाखण्ड को ही धर्म समझा जाने लगा। चूंकि संविधान में राष्ट्र को मतनिरपेक्ष घोषित किया गया है। मत और धर्म के मूल को न समझने के कारण धर्म के नाम पर मत मतान्तरों के झगड़े बढ़ने लगे। देश उन्नति के लिए शासन व्यवस्था का विधान है परंतु सत्ता पर स्थापित या सत्ता पाने के अभिलाषी धर्म के नाम पर विवादों को बढ़ाने में ही अपना लाभ देखने लगे।

सम्पूर्ण विश्व को सुखी रखने का परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान हैं। वेद की भाषा संस्कृत हैं। हमारी संस्कृति का निर्माण वेदानुसार है जो सारी सृष्टि के सुख समृद्धि का प्रदाता है। धर्म केवल एक है अनेक नहीं। धर्म सत्य है शाश्वत है सबका हित करना धर्म है। सबमें एकत्व स्थापित करना धर्म है, और यही भारतीय वैदिक संस्कृति हैं। परंतु आज राजनेता धर्म व संस्कृति को न समझने के कारण बैर व विरोध उपजाना अपना कार्य मान रहे हैं। केवल जिससे हमें वोट मिले वही हमारा धर्म व संस्कृति बन रही है। संस्कृति का निर्माण वेद से है वेद की भाषा संस्कृत है अतः बिना संस्कृत ज्ञान के संस्कृति को समझा ही नही जा सकता।

हमारे संविधान के अनुच्छेद ३४३(१) में कहा गया है कि आधिकारिक भाषा देव नागरी लिपि में हिन्दी भाषा है। संविधान के अनुच्छेद ३५१ में कहा गया है कि हिन्दी के विकास के लिए प्राथमिक रूप में संस्कृत और बाद में अन्य भाषा से शब्द लिए जायें परंतु आज इसके विपरीत संस्कृत भाषा को विद्यालयीय शिक्षा में स्थान ही नहीं है। अंग्रेजी का सर्वांगीण वर्चस्व बनाये रखने के लिए मैकाले के मानस पुत्रों ने पूरी शक्ति लगा दी हैं। संस्कृत को त्यागने के लिए इसे पूजा पाठ की भाषा तक कहा जा रहा है। कुछ प्रबुद्ध जन जब संस्कृत को पाठ्य क्रम में लाने का प्रयास करते हैं तो वोट के लोभी नेता उसका प्रबल विरोध करते हैं। उसके विरूद्ध प्रपंच रचकर उस पर साम्प्रदायिक विद्वेष फैलाने का लांछन लगाने में भी संकोच नहीं करते।

यदि हम जगे नहीं तो मैकाले के मानस पुत्र हमें कहीं का नहीं रखेंगे। मूल रूप में मैकाले ने इसाइयत के सर्वांगीण प्रचार के लिए ही हमारी शिक्षा नीति बदलवायी थी। अनेक वर्षो तक श्रीमती सोनिया के निर्देशन में हमारी सरकार चली और उसी युग में संस्कृत को पूरी तरह से पाठ्यक्रम से हटा दिया गया। मोदी सरकार के बनने पर संस्कृत के महत्व को समझने के लिए उसे पाठ्यक्रम में लाने का प्रयास किया गया तो चारों ओर कोहराम मच गया। संसद तक नहीं चलने दी गयी फलतः वह प्रयास मृतप्रायः हो गया।

देश हितैषी सभी प्रबुद्ध नागरिकों से विनम्र निवेदन है कि वे गहराई से चिन्तन करके प्राणि मात्र के हित और भारतीय वैदिक संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए एकबद्ध हो तदर्थ संस्कृत को विद्यालयों के पाठ्यक्रम में प्रारम्भिक कक्षाओं से ही अनिवार्य रूप से चलाने का सरकार पर दबाव बनायें। निश्चय ही ऐसा करने पर पाश्चात्य कु-संस्कृति पर अंकुश लग सकेगा और वैदिक संस्कृति का जन जन में समावेश हो सकेगा। मानव मानव में एकत्व का भाव जागेगा। राष्ट्र के गौरव की रक्षा का उत्साह बढ़ेगा। फिर हम अपने देश ही नहीं सम्पूर्ण विश्व को चरित्रवान् व सुखी समृद्ध बनाने में समर्थ बन सकेंगे।

-सम्पादक

''स्वामी-सेवक सम्बन्ध''

-विद्या वाचस्पति वेदपाल वर्मा शास्त्री

स्वामी सेवक सम्बन्ध में शास्त्रों काव्यों-महाकाव्यों-वेद-दर्शन उपनिषदों-महाभारत एवं गीता में बड़ा गम्भीर व्यवहार्थ विवेचन प्रस्तुत किया है।

पशु-पक्षियों को भी कथा-कहानियों में सन्दर्भित करते हुए महापण्डित विष्णु शर्मा ने पंचतन्त्र में निर्देश दिया है कि -

''स्वामिना सेवका स्नेहेन रक्षणीमाः'' अर्थात् स्वामी को सेवकों की स्नेह से रक्षा करनी चाहिये। अगर स्वामी सेवकों के साथ निर्विशेष (विशेषतारहित) व्यवहार करता है तो वहां उद्यमी (मेहनतकश) भृत्यों का उत्साह समाप्त हो जाता है। उनकी कर्मठता पर चोट पहुँचती है। विषय को स्पष्ट करते हुए एक श्लोक दिया है :-

निर्विशेषों यदा स्वामी समं भृत्येषु वर्तते।
तत्रोद्यम समर्थानामुत्साहः परिहीयते।।

अपने स्वामी के स्नेह के बिना सेवक मर्यादा-हीन हो जाता है। उनके स्नेह को शिर पर धारण करने का संकेत स्वामी को देते हुए उन्होंने लिखा है कि-

शिरसा विधृता नित्यं स्नेहेन परिपालिताः।
केशाऽपि विरज्यन्ते निःस्नेहाः किन्न सेवकाः।।

अर्थातः स्नेह (तेल) के सींचे बिना तो शिर के केश भी भद्दे हो जाते हैं - सूख जाते हैं - फिर निःस्नेही सेवकों की क्या दशा होगी? सेवक भी स्वामी के स्नेह की अपेक्षा रखते हैं। स्वामी-स्नेह के बिना सेवकों का उत्साह सूख जायेगा। राष्ट्र बल-हीन हो जायेगा। राष्ट के नायक कहलाने वाले जो नेता केवल अपनी कुर्सी के लिये, अपने परिवार के लिये दौड़धूप कर रहे हैं वे राष्ट्र-द्रोही हैं।

अपने उद्योगों की, अपने गांव-समाज और गृहस्थ की, विद्या-मन्दिरों देवालयों की, गुरुकुलों-विद्यालयों की, सामाजिक - धार्मिक संस्थानों की, कृषि-व्यापार - अन्न भण्डारों - खजानों की, राष्ट्र की सुरक्षा व बढ़ोतरी चाहते हो-तो सामान्य - सेवकों के साथ, देश की सीमा पर तैनात प्रहरियों के साथ नित्य सविशेष व्यवहार करना चाहिये।

३४१-३४२ वां सामवेद का मंत्र कहता है जो राजा राष्ट्र-प्रहरियों को समय-समय पर वेतन आदि की सुविधा नहीं देता तथा उनका सत्कार नहीं करता, वे उस स्वामी के विरोध में खड़े हो जाते हैं। सेना के वीर-सैनिकों की उपेक्षा का बड़ा भयानक परिणाम होता है।

१-१२०-११ ऋग्वेद मंत्र इसी भाषा को आगे बढ़ाता हुआ कह रहा है कि-तीव्रविपुत्गतिमान यानों के निर्माता कुशल शिल्पकारी सेवकों का सत्कार राष्ट्र-हित में रहता है।

नागानन्द नाटक के महाकवि शूद्रक तथा विक्रमाङ्कदेवचरित महाकाव्य के प्रणेता कश्मीरी महाकवि विल्हण क्रमशः दरिद्र-सेवकों का उपकार मानव धर्म कहा है। सच्चाइयों में दोष ढूंढने वाले दुष्ट-प्रकृति पुरुषों से दूर रहने की शिक्षा देते हुए कश्मीरी महाकवि कल्हवा कहते हैं कि दुष्ट प्रकृति वाले पुरुष इन्द्र के केलिवन में प्रवेश करके भी ऊँट के समान कांटों भरी झाड़ियों के उपयोग में ही लगे रहते हैं। उनसे भी दूर रहो। निरीक्षत केलिवनं प्रविश्य-क्रमेलकः कंटकजालमेव'' (विक्रमाङ्कदेवचरित)।।

१५ ८/२ अथर्ववेद कहता है ईश्वर स्वयं प्रेममय है तभी वह ब्रह्मण्ड का राजा कहाता है '' ततो राजन्योऽजायत'' प्रेम-भाषा स्वामी की धर्म-भाषा होती है।

वेद-विद्या के निरादर से राष्ट्र का नाश हो जाता है। इसीलिये वेद में परमात्मा आदेश कर रहा है- वीरों ! उठो-जागो, राष्ट्र से आतङ्क्वादियों की कलह मिट जायेगी ''५ २१/२३ अथर्व० ''

-मालदाबाग, पुरानी गुड़मण्डी
शाहपुर, मुजफ्फर नगर

thearyasamaj.org

मनुष्य को इन चार के ऊपर पूर्ण विश्वास रखना चाहिए

-खुशहाल चन्द्र आर्य

जो मनुष्य अपने जीवन को सुखी व सन्तोषमय बनाना चाहता है, उसको इन चार के ऊपर पूर्ण विश्वास रखना पड़ेगा, तभी वह सुखी व सन्तोषी बन कर रह सकता है। यदि कोई इनके ऊपर पूर्ण विश्वास न रखकर चलेगा तो वह कभी भी सुखी व सन्तोषी नही बन सकता। वे चार हैं (१) ईश्वर की न्याय-व्यवस्था (२) वेद-ज्ञान (३) महर्षि दयानन्द के मन्तव्य (४) आपकी आत्मा की आवाज।

(१) ईश्वर की न्याय व्यवस्था - ईश्वर सब जीवों का निर्माता अथवा पिता है, इसलिए सब जीव ईश्वर के पुत्र हैं। पिता अपने किसी पुत्र से भी अन्याय व पक्षपात नहीं करेगा। उसकी न्याय-व्यवस्था सब जीवों के लिए एक समान है। वह न किसी को अधिक देता है और न किसी को कम। मनुष्य को यह निश्चित समझ लेना चाहिए कि मैं जैसा कर्म करूंगा उसका फल ईश्वर वैसा ही देगा। ईश्वर सर्व व्यापक है, सर्वशक्तिमान है और सर्वज्ञ है। इसलिए उसकी नज़र से कोई नहीं बच सकता। यानि जो जैसा करेगा, ईश्वर अपनी न्याय-व्यवस्था से वैसा ही फल निश्चित ही देगा। मनुष्य को भी ईश्वर की न्याय-व्यवस्था पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिए। जब हमें पूर्ण विश्वास हो जायेगा कि यदि मैं कोई बुरा काम करूंगा तो ईश्वर उसका फल दुःख के रूप में देगा ही, तो हम बुरा काम करने से डरेंगे। यदि हमको ईश्वर की न्याय-व्यवस्था पर पूर्ण विश्वास होता है तो हमें दुःख सहने की शक्ति भी मिलती है। कारण हम यह सोचेगे कि यह दुःख जो मुझे मिल रहा है, यह मेरे किसी किये हुए बुरे कर्मों का ही फल है। ईश्वर मेरे ऊपर कोई अन्याय नहीं कर रहा है। जब ईश्वर के घर में अन्याय करना है ही नहीं तो वह मुझ पर अन्याय क्यों करेगा? मुझे बिना बुरे कर्म किये दुःख क्यों देगा? जब मुझे दुःख दिया है तो मैंने कभी बुरा कार्य किया है, तो उसके परिणाम स्वरूप मुझे सन्तोष के साथ दुःख सहना चाहिए और आगे के लिए मैं अच्छे काम करूँ ताकि मुझे दुःख न मिले।

अब प्रश्न उठता है कि अच्छे और बुरे कर्म कौन-कौन से हैं। इसका उत्तर यही है कि ईश्वर जितने भी काम करता है, वह बिना स्वार्थ के जीव के हित व कल्याण के लिए ही करता है। सभी मनुष्य ईश्वर की सन्तान है, इसलिए उसे भी अपने पिता के समान ही काम करने चाहिए। जिन कामों से दूसरों का हित व प्रसन्नता प्राप्त होती हो, वे सभी काम अच्छे हैं जैसे दया, करूणा, परोपकार, स्नेह, प्रेम, सच्चाई, ईमानदारी, निष्पक्षता आदि। ये सब अच्छे कर्म है, इनसे दूसरो का भला होता है और उनकी आत्मा में प्रसन्नता होती है। महात्मा व्यास के शब्दों में ''आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'' जो काम अपनी आत्मा को पसन्द हो, वही काम दूसरों से भी करें। महात्मा तुलसीदास के शब्दों में ''परहित सरिस धर्म नहीं भाई, पर-पीड़ा सम नहीं अधमाई''। गीता के शब्दों में अवश्वमेव मोक्तव्यम् कृतंकर्म शुभाशुभम्'' किये हुए कर्मो का फल अवश्य मिलता है। सो यही समझकर हमें अच्छे कर्म करने चाहिए ताकि हमें दुःख न मिले। इसके विपरीत द्वेष, ईर्ष्या, छल, कपट, पक्षपात, हिंसा आदि बुरे कर्म है, इनसे दूसरों को कष्ट होता है, इसलिए ये कर्म न करें।

२- वेदों पर पूर्ण विश्वास रखें- हम ऊपर लिख चुके हैं कि ईश्वर सभी जीवों को पैदा करने वाला है इसलिए ईश्वर सबका पिता हुआ और सभी जीव ईश्वर के पुत्र हुए। जब हम संसारिक पिता पर ही इतना विश्वास करते हैं कि वह हमारा कभी भी अशुभ चिन्तक नहीं हो सकता। तो हमें परम् पिता परमात्मा पर तो जरूर ही पूर्ण विश्वास रखना चाहिए कि ईश्वर हम पर कभी भी अन्याय नहीं कर सकता। ईश्वर ने वेद-ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में इसीलिए दिया था कि मनुष्य अपने जीवन में किस प्रकार रहे जिससे वह अपने व दूसरों के जीवन को सुखी व आनन्दित बना सकें। वेद ईश्वर की संविधान की पुस्तक है जो मनुष्यों को जीने की कला सिखाता है। जिस प्रकार संविधान से राष्ट्र चलता है उसी प्रकार यदि मनुष्य वेदों के अनुसार चले तो वह अपने जीवन को पूर्ण सुखी व शान्तिमय बनाकर मोक्ष प्राप्ति की ओर अग्रसर हो सकता है जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है और यह मनुष्य योनि में ही सम्भव है। इसलिए जीव को पहले अपने शुभ कर्मों से मनुष्य योनि में आना पड़ेगा। फिर वह अपने जीवन को वेदानुकूल बनाने से वह मोक्ष पाने का अधिकारी बन सकेगा। मोक्ष प्राप्ति का अन्य कोई मार्ग नहीं। जब हमें ईश्वर पर पूर्ण विश्वास है तो हमें उसके बनाए वेदों पर भी पूर्ण विश्वास रखना चाहिए।

३- महर्षि दयानन्द पर पूर्ण विश्वास रखना- जो व्यक्ति केवल परोपकार की भावना से ही काम करता है, जिसको अपना कोई स्वार्थ नहीं होता, ऐसा व्यक्ति जो कुछ कहेगा या लिखेगा, वह सब मनुष्य-मात्र ही नहीं बल्कि प्राणी-मात्र के लिए लाभदायक व कल्याणकारी होगा। उसके कहे व लिखे पर बिना किसी सन्देह व शंका किये मान लेना चाहिए और उसके अनुसार चलना चाहिए। महर्षि दयानन्द एक ऐसे ही महामानव थे, जीवन भर परोपकर के लिए जीये और परोपकार के लिए ही मरे। वे १८ घण्टों की समाधि के अभ्यस्त हो चुके थे जो उनकी मोक्ष प्राप्ति के लिए पर्याप्त था। यानि महर्षि अपनी १८ घण्टों की समाधि से ही मोक्ष प्राप्त कर सकते थे। परन्तु स्वामी जी केवल स्वयं ही मोक्ष में नहीं जाना चाहते थे। वे चाहते थे कि सब मनुष्य मोक्ष को प्राप्त करें। मोक्ष प्राप्ति के लिए वेदानुकूल चलना बहुत जरूरी है। इसीलिए महर्षि ने वेदों का ज्ञान जानने की विधि अपने सद्गुरू स्वामी विरजानन्द की गोद में लग भग तीन साल बैठ कर सीखी, फिर वेदों का तथा वेदों सम्बन्धी सभी ग्रन्थों का अध्ययन किया। वेद-ज्ञान की श्रेष्ठता जानने के लिए, इनके विपरीत ग्रन्थों का भी स्वाध्याय किया। जब यह जान लिया कि वेदानुकूल चलने से ही मानव-मात्र अपने जीवन को पवित्र व महान बनाकर जीवन का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है, तब स्वामी जी ने अपने पूरे जीवन में वेदों का प्रचार व प्रसार किया और लोगों को वेद-मार्ग को अपनाने का आग्रह किया जिससे वे भी अपने जीवन को स्वच्छ व पवित्र बनाकर मोक्ष को प्राप्त कर सकें। स्वामी जी ने वेदों का केवल प्रचार ही नहीं किया बल्कि अनेकों ग्रन्थ भी लिखें इसलिए हर व्यक्ति को ऐसे उपकारी व्यक्ति के लिखे ग्रन्थों को पढ़ना चाहिए और उसके लिखे पर पूर्ण विश्वास करके तथा उनके अनुसार चलकर अपने जीवन को तथा अन्यों के जीवन को सुखी व पवित्र बनाना चाहिए।

४- अपनी आत्मा की आवाज पर विश्वास रखना-महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' में लिखा है कि मनुष्य की आत्मा सत्य व असत्य को जानने वाली होती है। इसीलिए जब मनुष्य कोई बुरा काम करने की सोचता है या करने के लिए उद्यत होता है तब उसकी आत्मा उस काम को न करने को कहती है और उसके मन में भय, लज्जा व शंका उत्पन्न कर देती है ताकि वह उस काम को न करे। परन्तु वह अपने हठ, दुराग्रह, अज्ञान व विवशता के कारण कर लेता है ईश्वर आत्मा उसको कई बार न करने को कहती है। जब वह अभ्यस्त हो जाता है तब आत्मा की आवाज आनी बन्द हो जाती है। इसी प्रकार जब मनुष्य कोई अच्छा काम करने की सोचता है या करने के लिए तैयार होता है, तब भी आत्मा उसको वह काम करने के लिए उत्साहित व प्रेरणा करती है और उसके मन में उत्साह, आनन्द व प्रसन्नता की अनुभूति कराती है ताकि वह उस अच्छे काम को जरूर-जरूर करे। महर्षि दयानन्द के अनुसार यह आत्मा की आवाज़ ईश्वर की तरफ से होती है। इसलिए मनुष्य को अपनी आत्मा की आवाज के अनुसार उसके ऊपर पूर्ण विश्वास रखकर वह कार्य जरूर-जरूर करना चाहिए ताकि वह बुराईयों से बच सके और अच्छाईयों को अपना सके जिससे वह अपने जीवन को सुधार कर उन्नति की ऊँचाईयों को आसानी से छू सके।

●●●

शेर- पत्थरों को सींचो, फसल तैयार हो सकती है,
हिम्मत मत हारो, तकदीर बदल सकती है,
'सागर' ने क्या कहा, मतलब तो समझो,
एक एक को जोड़ो, जागीर बन सकती है-**सागर**

सत्य ही जीतता है

क्यों ? छोड़ दूँ, मैं हौसला,
हौसला तो लफ्ज़े जीत है।
मैं नाम का, देवेन्द्र नहीं,
साथ मेरे, संगति प्रीत है।।
जो हुआ, अच्छा हुआ, जो था होना, वह हो गया,
शाम तो आती है रहती, देखो, असत्य, सत्य में खो गया,
है कर्त्तव्य हमारा क्या तुम्हारा,
बस जीते कर्त्तव्य, यही तो जीत हैं।।
मैं नाम का, देवेन्द्र नहीं,
साथ मेरे, संगमी प्रीत है।
आशीष लेने को, हूँ मैं आया, आशीष दें, कृतार्थ करें,
कभी ईमान, छोड़ूँगा नहीं, मेरी बात का विश्वास करें,
'सागर' देवेन्द्र को विश्वास दिलाए,
आपकी जीत हो, हम सभी की जीत है।
मैं नाम का, देवेन्द्र नहीं, साथ मेरे, संगमी प्रीत है।।

-डॉ. बी.पी. सागर, अन्तरंग सदस्य
आ.प्र.स. उ.प्र., लखनऊ

प्रयास होगा-
हम आपके स्वप्न के साकार कर्ता हो सकें।
- पंकज जायसवाल (सह-कोषाध्यक्ष)
- अक्षय कुमार गुप्ता, पी.एन. मिश्रा
सोहन जी पाण्डेय, विजय नन्द सिन्हा
डॉ. जे.आर.शर्मा एवं अन्य सभी।

thearyasamaj.org

(हिन्दू) धर्म की रक्षा आर्य समाज ने की है -देवेन्द्र पाल वर्मा

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के संरक्षण में आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रयाग (इलाहाबाद) प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी माघ मेला में एक मास का वेद प्रचार शिविर लगाया जिसमें नित्य देवयज्ञ धर्म के सच्चे स्वरूप को समझाने के लिए तथा सभी बुराइयों से मुक्त भारत को बनाने के लिए वेद के पठन पाठन का सन्देश विद्वानों ने दिया। दिनांक १६.१.१५ को आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा शिविर में पधारें। उनका शिविर में पहुँचने पर लाल बहादुर शर्मा, हीरालाल आर्य धूमनगंज, अजय मेहरोत्रा, यज्ञ नारायण सिंह, राजेन्द्र कपूर, रवि पाण्डेय, सत्यनारायन यादव कटरा, चेतना स्त्री समाज रंजना सोमती, अरूणेश, विवेक गुप्ता, दिनेश केशरी, श्रीमती मंजु चतुर्वेदी (प्रधानाचार्या, कान्वेंट इण्टर कालेज), हरविन्दर कौर, रेनू जोशी, आ.क.इं. कालेज, रश्मि अग्रवाल, अरविन्द वर्मा, पांचू यादव, श्रीमती डा. रमा सिंह, आ. क.डिग्री कालेज उप प्रधानाचार्या, श्रीमती रेनू चड्ढा, कृपानाथ त्रिपाठी, अक्षय कुमार गुप्ता, अजय पाण्डेय, अ. स.कौशाम्बी, विजयानंद सिन्हा, मंत्री आर्य समाज-कटरा, कुम्भनाथ, श्याम किशोर शास्त्री, सिद्धान्त शास्त्री आदि ने माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। पूर्व निर्धारित व्यवस्थानुसार पहले वृहद यज्ञ हुआ जिसके मुख्य यजमान प्रधान जी बने। यज्ञ के अनन्तर श्री बी.पी. सागर, श्री श्याम किशोर आर्य, सिद्धान्त शास्त्री श्री पंकज जायसवाल, श्री अजय मेहरोत्रा, श्री जे.आर. शर्मा, श्री लाल बहादुर शर्मा ने मेले में वेद प्रचार शिविर लगाने की उपयोगिता बतायी।

सभा प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ने अपना भाषण देते हुये कहा कि हमारा देश धर्म प्रधान देश है। यह सारे विश्व को सच्चे धर्म का मार्गदर्शन देता रहा है। वेदानुकूल जीवन जीने का संदेश देता रहा है। महाभारत काल के बाद धर्म के तत्व को समझने में विकार आने लगे। धर्म केवल पूजा का विषय बनकर रह गया। जिससे तरह तरह के ढोंग पाखण्ड नारी उत्पीड़न, उसकी उपेक्षा, अशिक्षा व जाति पांति का भेद बढ़कर देश को तोड़ने लगा फलतः देश पराधीन हुआ।

पराधीन भारत में मानव जाति के कल्याण का मार्ग दिखाने के लिए महर्षि स्वामी दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने राष्ट्रोत्थान के लिए देश का स्वाधीन सुखी सम्पन्न बनाने के लिए धर्म के सच्चे स्वरूप को जन जन में फैलाने के लिए आर्य समाज की स्थापना की। ऋषि दयानन्द ने हरिद्वार के महाकुम्भ मेले में पाखण्ड खण्डिनी पताका फहरायी।

उन्होंने आगे कहा कि हमारे देश में नदियों के तीर पर धर्म प्रचारार्थ मेले लगाये जाते रहे हैं। जो आज भी लगाये जाते हैं परंतु सच्चे धर्म के प्रचार के स्थान पर अधर्म पनपता है। आर्य समाज अपने दायित्व के निर्वाह के लिए मेलों में अपने शिविर लगाकर सच्चे धर्म के प्रचार में रत रहता है। आज इस मेले में आने पर मैं अपने को सौभाग्यशाली मानता हूँ। आजादी के आन्दोलन को नष्ट करने के लिए अंग्रेजों ने हिन्दू मुस्लिम में भेद डालने की नीति चलायी। निजाम हैदराबाद में हिन्दुओं के मंदिरों को तुड़वाने लगा, नये बनने पर रोक लगायी। उनकी मरम्मत नहीं करने देता था। हिन्दू धर्म को सभी तरह से नष्ट नाबूद करने की निजाम की कोशिश जारी थी तो आर्य समाज ने सन् १९३८ में वहां इसके विरूद्ध आवाज उठायी, आन्दोलन चलाया। तमाम आर्य वीर शहीद हुये। निजाम की जेलें आर्य सत्याग्रहियों से भर गयी। जिससे निजाम घबराया। आर्य समाज की मांगे मानी, मंदिरों का गिराया जाना रोका। हिन्दू धर्म की रक्षा हुई।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता महात्मा गांधी हिन्दू मुस्लिम के भेद के प्रपंच को न समझ सके थे। निजाम के विरूद्ध चुप थे तो आर्य समाज के भजनोपदेशक कुंवर सुख लाल आर्य मुसाफिर ने एक भजन से गांधी जी को जगाने का यत्न किया था। गजल की अंतिम पंक्तियां -

ये क्या हैदराबाद में हो रहा है,
कि महशर का आलम बयां हो रहा है।
हमारी हिमायत न कर प्यारे गांधी,
मगर इतना कह दे कि बुरा हो रहा है।।

आज भी सभी को जगाने के लिए पर्याप्त है।

प्रधान जी ने आगे कहा कि जब तक जन जन में वेद ज्ञान का प्रसारण नहीं होगा तब तक पाखण्ड बढ़ता रहेगा और हम धर्म के नाम पर लुटते रहेंगे। इसीलिए आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य का यह धर्म है कि वह जन जन में वेद के पठन पाठन की रूचि उत्पन्न करने के लिए प्रतिबद्ध हो। वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है शेष पुराणादि मनुष्यकृत कल्पित ग्रंथ ही है।

अतः वेद पथ पर हम चलकर ही अपना उत्थान कर सकेंगे और दूसरे को उत्थान का मार्गदशन दे सकेंगे। हमें सरकार पर भी दबाव बनाना चाहिए कि वह सभी विद्यालयों में अनिवार्य रूप से वेद को पढ़ाने की व्यवस्था करें। आर्य समाज के प्रत्येक विद्यालयों में छात्र छात्रायें के नैतिक चरित्र निर्माण के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. ने नैतिक शिक्षा की पुस्तकें कक्षा १ से १२ तक के लिए तैयार की हैं। जिसमें वेद मंत्रों के माध्यम से नैतिक जीवन के निर्माण का मार्ग प्रशस्त है। हर आर्य समाज में दैनिक सत्संगों की व्यवस्था हो। प्रत्येक व्यक्ति देव यज्ञ करने का अभ्यासी बनें। देव यज्ञ पर्यावरण शोधन का सर्वोत्तम उपाय है। यज्ञ में शुद्ध जड़ी बूटियों से निर्मित हवन सामग्री, शुद्ध घी, (सर्वोत्तम गौ घृत है) का प्रयोग किया जाये।

यज्ञ के पात्र उत्तम हों। यज्ञ कुण्ड उत्तम व आकर्षक हों। यज्ञ पात्र, यज्ञ सामग्री और हमारी यज्ञ में तल्लीनता यज्ञ का श्रृंगार है। हम जन जन में देव यज्ञ करने का आकर्षण उत्पन्न करायें। जब घर घर में देव यज्ञ, हर आर्य मंदिरों में देव यज्ञ उत्तम सामग्री से किये जायेंगे तो निश्चय ही प्रदूषण नष्ट होगा। प्राकृतिक वातावरण उन्नत होगा। आर्य समाज अपने इस दायित्व का निष्ठा से पालन करें। निश्चय ही सफलता होगी। विश्व प्रदूषण से मुक्त होगा, विचार बदलेंगे। समाज सुधरेगा।

दयानन्द वैदिक कान्वेंट स्कूल के कक्षों का उद्घाटन

प्रयाग में सर्वप्रथम सभा प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, दयानन्द वैदिक कान्वेंट स्कूल में पहुँचे वहां पहुँचने पर कालेज के अधिकारियों एवं प्रधानाचार्या ने प्रधान जी का माल्यार्पण द्वारा भव्य स्वागत किया।

प्रधान जी ने दो नव निर्मित कक्षों का उद्घाटन करते हुये कहा कि विद्यालय ही बालक बालिकाओं को सुनिर्मित करने की कार्यशाला है। प्राचीन काल में बालक बालिकाओं के विद्यालयों में गुरूजन छात्र छात्राओं को अपने पूर्ण संरक्षण में रखकर राष्ट्र को अमूल्य निधि बनाकर देते थे। पराधीनता काल में हमारी शिक्षा व्यवस्था समाप्त करके लार्ड मैकाले की शिक्षा व्यवस्था चलायी गयी जिसमें सदैव गुलाम रखने की भावना भरी होती है और रोजी रोटी और मकान की चिन्ता तक ही युवक युवती सोचने तक का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

पराधीन भारत में महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने देश की पराधीनता के मूल में वैदिक शिक्षा का आभाव, नारी उत्पीड़न, ढोंग, पाखण्ड और अशिक्षा को पाया था। देश को पराधीनता से मुक्त कराने के लिए उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। बालक बालिकाओं के विद्यालयों व गुरूकुलों की स्थापना पर बल दिया। अनेक विद्यालय व गुरूकुल खुले जिसमें पढ़कर बालक बालिकाओं ने राष्ट्र धर्म का ज्ञान प्राप्त किया और स्वराज्य आन्दोलन में अपना सर्वस्वार्पण करके भारत को स्वाधीन कराया। स्वाधीनता के बाद हमारी स्वाधीन सरकार ने शिक्षा व्यवस्था मैकाले की ही रही । हमारे सभी विद्यालय सरकारी सहायता के मोह में फंसकर उसी शिक्षा को चलाने के लिए विवश है।

फलतः आज देश में मानव का नैतिक चरित्र समाप्तप्राय है। अनैतिकता, स्वार्थान्धता बढ़कर राष्ट्र को क्षीण कर रही है। हमें अपने सभी विद्यालयों में वैदिक शिक्षा का पाठ्यक्रम वर्तमान शिक्षा के साथ साथ विशेष रूप से चलाने का निश्चय करना चाहिए। पहली कक्षा से १२वीं कक्षा तक के लिए नैतिक शिक्षा की पुस्तकें आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. ने तैयार करायी है। हमारे सभी विद्यालय अनिवार्य रूप से उन पुस्तकों को अपने विद्यालय में मंगाकर नैतिक शिक्षा के पढ़ाने की अनिवार्यतः व्यवस्था करें। बालक बालिकायें ही राष्ट्र के स्तम्भ होते हैं उनके निर्माण स्थल विद्यालय ही होते हैं। इसकी गंभीरता को जानकर हम जब अपने बच्चों के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध होंगे तो निश्चय ही सुधार आयेगा। अनैतिकता का समापन होगा। बुराइयां नष्ट होगीं और हमारा देश महर्षि दयानन्द के मन्तवयों के अनुरूप बनकर विश्व का मार्ग दर्शक बनेगा। अन्त में प्रधान जी ने विद्यालय के सभी अधिकारियों शिक्षक, शिक्षिकाओं का धन्यवाद करते हुए उन्हें अपने दायित्वों का पूरी तरह से निर्वाह करने का संदेश देकर अपने भाषण को विराम दिया।

thearyasamaj.org

बृहदधिवेशन के कतिपय चित्र

thearyasamaj.org

जीवन निर्माण की औषधि सत्संग व स्वाध्याय

स्वाध्याय और सत्संग मनुष्य जीवन के दो निर्माता हैं। महापुरूष बनाने का मुख्य श्रेय इन दोनों आयोजनों को जाता है। ज्ञान प्राप्ति का आधार यूँ तो प्रत्यक्ष अवलोकन एवं पूर्व संस्कार भी कहे जा सकते हैं, किंतु स्वाध्याय एवं सत्संग श्रवण और दर्शन (चिन्तन) का प्रयोजन पूरा करते हैं। किसी भी वस्तु को प्राप्त करने के लिए साक्षात्कार चतुष्ट्य को जानना और अनुष्ठान करना आवश्यक होता है। श्रवण, मनन, निदिध्यासन, साक्षात्कार, चतुष्टय में श्रवण और मनन क्रमशः सत्संग और स्वाध्याय ही है। सत्संग और स्वाध्याय के बिना निदिध्यासन और साक्षात्कार कभी संभव ही नहीं हो सकता। सत्संग और स्वाध्याय ही यह निर्धारित करते हैं कि हमें क्या करना है? कैसे करना है? कैसे रहना हैं? किसे पाना हैं?

अतः जीवन के उच्च लक्ष्य को पाने के लिए प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में स्वाध्याय और सत्संग की व्यवस्था अवश्य बनाकर रखनी चाहिए। यह कार्य यदि उत्तम संस्थायें करती हैं तो उसका लाभ वहां से ले लेना चाहिए। गुरूकुल इसके लिये बहुत ही सुन्दर स्थान कहे जा सकते हैं। स्वाध्याय का मुख्य रूप से सार्थकता तभी होती है, जब हम वेद का अध्ययन करते हैं। ये कहा है-

आधयो व्याधयो चैव द्वयोः दुःखस्य कारणम्।
तन्निवृत्तिः सुखं विद्यात् तत्क्षयो मोक्ष उच्यते।।

आधि (मानसिक) और व्याधि (शारीरिक) दुःख के कारण हैं, इनकी निवृत्ति स्वाध्याय और सत्संग के द्वारा होती है। अतः प्रतिवर्ष श्रावणी से लेकर चार मास पर्यन्त कुछ अधिक समय सब कामों से निवृत्त होकर ऋषि तर्पण का कार्य स्वाध्याय और सत्संग की परम्परा में सभी श्रद्धालु जनों को अपना समय अवश्य लगाना चाहिए। पुरातन काल से ऋषि तर्पण एंव आत्म अर्पण का कार्यक्रम चला आ रहा है। इसी स्वाध्याय से ही सभी देवता सामने आ जाते हैं अर्थात् उनका तत्वज्ञान प्राप्त होता है। सब देवों का देव परमेश्वर भी स्वाध्याय से ही प्राप्त होते हैं। ''स्वाध्याय योग सम्पत्या परमात्मा प्रकाशते''। धर्म, अर्थ, काम मोक्ष की सिद्धि का तत्वबोध स्वाध्याय द्वारा होता है। वर्णाश्रम के कर्तव्य का बोध स्वाध्याय द्वारा होता है।

श्रावणी पर्व के अवसर पर ऋषि ऋण को चुकाकर ऋषि तर्पण और परस्पर एक दूसरे का मित्रवत् रक्षा करने का पर्व ''रक्षाबन्धन'' एवं शारीरिक, आत्मिक सामाजिक उन्नति करने हेतु वैदिक सत्संग के आयोजनों में श्रद्धा, भक्ति, शुभ संकल्पों के साथ अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर विशेष लाभों से लाभान्वित होवें।

स्वामी दयानन्द हमें वेदों से जोड़ते हैं क्यों? (विभिन्न विद्वानों की दृष्टि में वेदों की महत्ता)

स्वामी दयानन्द की विशेषता बताते हुए हमारे विद्वान कहते हैं ''संसार में अनेक महापुरूष, देवी-देवता अपनी विशेष पहचान रखते हैं, जिनसे उन्हें पहचाना जाता है, कोई बांसुरी रखता है, कोई शंख, कोई वीणा आदि परंतु स्वामी दयानन्द को किसी विशेष बात से पहचाना जाता है तो वेद से पहचाना जाता है।'' स्वामी जी ने हम सबको भी वेद से जुड़ने का आदेश दिया। स्वामी जी का वर्तमान युग में यह नया काम अवश्य था परंतु प्राचीन ऋषियों को देखें तो यह कार्य अत्यन्त पुराना है, उतना ही पुराना जितना पुराना मनुष्य है।

महान वैयाकरण पंतजलि ऋषि कहते हैं - जो मनुष्य विद्वान और ब्राह्मण बनना चाहता है, उसे कर्तव्य समझकर वेद का अध्ययन करना चाहिए। केवल वेदों का अध्ययन ही नहीं करना चाहिए अपितु वेदांगों के साथ अध्ययन कर उनके अर्थो को भी जानना चाहिए। यहां पर वेदाध्ययन के लिए एक शब्द प्रयुक्त हुआ है ''निष्कारणो धर्मः'' सांसारिक प्रयोजनों के लिए सभी लोग नाना प्रकार की विद्यायें पढ़ते हैं परन्तु वेद पढ़ने से यदि कोई सांसारिक लाभ सिद्ध नहीं होता तो भी वेदाध्ययन सर्वोपरि मानकर उसका अध्ययन करना ब्राह्मण के जीवन का उद्देश्य बताया है।

आचार्य आपस्तम्ब ने वेदाध्ययन पर बल देते हुए कहा है ''मनुष्य यदि आजीविका उपार्जन में लगता है तो उसका वेदाध्ययन छूट जाता है, यदि वेदाध्ययन में लगता है तो आजीविका छूट जाती है ऐसी परिस्थिति में मनुष्य क्या करें? तब ऋषि कहते हैं - बुद्धिमान मनुष्य को योग्यता है यदि वह समर्थ है तो दोनों कार्य करें, यदि दोनों में से केवल एक का चुनाव करना पड़े तो वेदाध्ययन को ही महत्व देना उचित है।

एक अच्छा डाक्टर एक अच्छा इंजीनियर बनना उसके तकनीकी ज्ञान व योग्यता पर निर्भर करता है, परंतु मनुष्य बनना वेद के ज्ञान पर निर्भर करता है।

संसार के सारे कौशल मनुष्य को अर्थोपार्जन के योग्य बनाते हैं, परंतु वेद का ज्ञान मनुष्य को समाजोपयोगी बनाता हैं।

एक मनुष्य को विद्वान बनाना आवश्यक है, परंतु धार्मिक बनाना भी उतना ही आवश्यक है। मनुष्य केवल विद्वान बनकर स्वार्थी और धूर्त बन जाता है। वह बुद्धि का उपयोग स्वार्थ के लिए करता है। केवल धार्मिक व्यक्ति ज्ञान के अभाव में मूर्ख बन जाता है। अतः स्वामी जी मनुष्य को विद्वान और धार्मिक बनाने की बात करते हैं।

वेद पढ़कर आचार्य अपने विद्यार्थी को जो उपदेश देता है, वह संसार का सर्वोच्च और सर्वोत्तम उपदेश है।

अन्य शिक्षाओं से वेद की शिक्षा में जो अन्तर है, वह है आज की पाश्चात्य शिक्षा का जो मनुष्य को मजदूर बनाती है, हम मंहगे मजदूर बनकर संतुष्ट हो जाते हैं, वेद स्वामी बनाने की बात करता है। जो निर्देश पर कार्य करता है, उसे कितना भी धन मिले वह मजदूर ही रहता है। जो औचित्य से कार्य करता है वह स्वामी होता है। मनुष्य विचारवान होकर भी स्वामी बनता है। हम तकनीक सीखकर धन अधिक से अधिक कमा सकते हैं परंतु विचारवान् नहीं बन सकते हैं, विचारवान बनने के लिए वेदशास्त्र, दर्शन व्याकरण पढ़ना होगा। भाषा हमें विचार करने की क्षमता देती है और शास्त्र विचार करने की दिशा देते हैं।

संसार में मनुष्य के पास उसकी दो चीजें हैं, एक उसका शरीर और दूसरी आत्मा। हमें शरीर के विषय में सोचना तो सिखाया जाता है परंतु आत्मा के विषय में सोचना हम नहीं जानते क्योंकि इसके विषय में हमें कोई नहीं बताता। वेद दोनों के विषय में बताता है। हमारे ऋषियों ने मनुष्य के जीवन में वेदों को महत्व दिया। स्वामी जी ने हमको वेद से उसी प्रकार जोड़ा है जैसे मनु आदि ऋषियों ने बताया था।

प्रातःकाल कोई व्यक्ति उठता है तो वेद मंत्रों का पाठ करते हुए उठता है, स्नान करता है तो मंत्र पढ़ता है,संध्या हवन करता है तो मंत्र पढ़ता है, भोजन करता है तो मंत्र पढ़ता है उसमें वह कहता है कि अन्न प्रभु का दिया हुआ है, जैसे वह मेरे जीवन के लिये आवश्यक है उसी प्रकार सब प्राणियों के जीवन के लिए आवश्यक है। मुझे अपना भोजन करते हुए दूसरों की भोजन की भी चिन्ता करनी चाहिए। मैं भोजन करूं यह स्वार्थ है, व्यक्तिगत है, सबको भोजन मिले यह धर्म है, परोपकार है। इसी कारण हम अपने प्रत्येक कार्य से वेद को जोड़ते हैं जिससे वह कार्य सामान्य कार्य नहीं होकर उत्कृष्ट कार्य हो सकें।

वेद हमारी वैचारिक सम्पत्ति है, अन्य सम्पत्ति के नष्ट होने पर, खोने पर वह प्राप्त की जा सकती है परंतु ज्ञान की सम्पत्ति का पाना दुर्लभ है। हजारों लाखों वर्षो से मनीषियों ने जिस ज्ञान-विज्ञान की खोज की है उसका आधार वेद है। अतः उसकी प्राप्ति और सुरक्षा वेद से ही सम्भव है।

आचार्य कमल किशोर (राजेपुर)

आर्य समाज बगहा एवं रामगढ़ का वार्षिकोत्सव आयोजित

आर्य समाज मिर्जापुर में मकर संक्रान्ति को वेद प्रचार मण्डल क्रियात मिर्जापुर के दस आर्य समाजों की बैठक यज्ञोपरांत हुई जिसमें बगहा और रामगढ़ के वार्षिकोत्सव को सफल बनाने के लिए तन मन धन से सहयोग देने का प्रस्ताव पारित किया गया। १३, १४ व १५ फरवरी को आर्य समाज बगहा में व १६, १७ फरवरी को रामगढ़ में वार्षिकोत्सव का आयोजन किया जा रहा है।

वेद प्रचार मण्डल क्रियात का वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ-

अध्यक्ष	श्री बेचन सिंह आर्य
उपाध्यक्ष	आदया प्रसाद सिंह
मंत्री	श्री विजय नारायन सिंह
उपमंत्री	श्री श्याम लाल सिंह चुने गये।

बेचन सिंह आर्य
अध्यक्ष वेद प्रचार मण्डल
क्रियात मिर्जापुर

अभिनन्दन समारोह

दिनांक १६ फरवरी दिन रविवार को सायंकाल ४ बजे आर्य समाज बगहा मिर्जापुर के यजुर्वेद पारायण महायज्ञ व ६२वें वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. व संचालक गुरूकुल पूठ गढ़मुक्तेश्वर का एवं आचार्य विश्वव्रत शास्त्री संस्थापक गुरूकुल जानकीपुरम् तथा श्रीमती धर्मरक्षिता विहार, श्रीमती लक्ष्मी रानी खन्ना का अभिनन्दन पूर्वांचलों के प्रमुख आर्य समाजों तथा वेद प्रचार मण्डल क्रियात मिर्जापुर व आर्य समाज बगहा मिर्जापुर द्वारा किया जायेगा।

बेचन सिंह आर्य
उप प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. लखनऊ।

शुद्ध शास्त्रोक्त सुगन्धित एवं रोगनाशक आर्य हवन सामग्री

घटक द्रव्य-कोकिला, नागर मोथा, कपूर कचरी, बकुची, लाल चंदन आदि द्वारा निर्मित हवन सामग्री

थोक मूल्य- मीडियम हवन सामग्री मात्र ४० रूपये में

मार्ग व्यय अतिरिक्त

आर्य इण्डस्ट्रीज

१५० नई बस्ती, सीतापुर

मो ७३९८३०००२९, ९३०७४२८९१३

ई-मेल- 101 yatendra @ gmail.cm

नोट- ऋतु अनुकूल व सुपर स्पेशल हवन सामग्री आदेशानुसार तैयार करवायी जाती है।

जन्मोत्सव

आर्य समाज खेड़ा जलालपुर के राजेश कुमार गुप्त के पुत्र विद्यान्त का जन्म दिवस वैदिक रीति के अनुसार श्री हरिदेव मुनि वानप्रस्थी के द्वारा सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम के पश्चात् राजेश कुमार गुप्त ने आये हुए सभी सज्जनों को सम्मानपूर्वक प्रसाद वितरित किया तथा गुरूकुल दातागंज को १०१/- का दान प्रदान किया।

तेज सिंह त्यागी
प्रधान आर्य समाज
ग्रा. खेड़ाजलालपुर वाया उसैहत
जनपद बदांयूँ, उ.प्र.

thearyasamaj.org

आवश्यक सूचना

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों एवं आर्य उप प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों से निवेदन है कि आप अपना वार्षिक चित्र भेजते समय अपना मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें जिससे आपको सूचना प्रेषित करने में सुविधा रहे और सीधा सम्पर्क किया जा सकें।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती,
मंत्री

प्रदेश के समस्त आर्य समाजों एवं आर्य उप प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों से निवेदन है कि आप अपनी समाज का वार्षिक निर्वाचन यथाशीघ्र समय पर सम्पन्न कर लेवें निर्वाचन करते समय अधिष्ठाता आर्य वीर दल का अपने स्तर पर योग्य युवक का चयन अवश्यमेव करके उसकी सूचना सभा कार्यालय को अवश्य प्रदान करें। आपके द्वारा प्रेषित नाम एवं मोबाइल नम्बर की प्रतीक्षा रहेगी।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री

प्रदेश के समस्त आर्य समाजों एवं आर्य उप प्रतिनिधि सभा के कार्य को विधिवत् संचालन हेतु अनिवार्य अर्हताएं निश्चित की गई हैं जो निरीक्षण समय पर प्रत्येक समाज के कार्यालय में उपस्थित रहनी चाहिए-

१. सदस्यता पंजिका तिथि एवं वर्ष रसीद संख्या सहित
२. कार्यवाही पंजिका में अंतरंग एवं साधारण सभा अंकित हो।
३. साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका विवरण
४. बैंक खाता पास बुक सहित
५. कार्यालय में पत्र व्यवहार हेतु-लेटर पैड, मोहर, रसीद बुकें एवं पुराने रिकार्ड की पत्रावली सुरक्षित हो।
६. वार्षिक निर्वाचन में अधिकारियों की सूची फोन नं. सहित हो
७. आय-व्यय पंजिका, रोकड़ एवं खाता पंजिका
८. समाज भवन का मानचित्र एवं अन्य सम्पत्तियों का विवरण अंकित करना अनिवार्य होगा।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री

मकर संक्रान्ति पर्व पर कम्बल वितरण समारोह

आर्य समाज अवन्तिका गाजियाबाद की आरे से महर्षि दयानन्द वाटिका पार्क में १०-११ जनवरी २०१५ को वृहद आयोजन किया गया जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा डा. वेदपाल आर्य मेरठ रहे। कुलदीप आर्य बिजनौर के भजन हुए। अध्यक्षता ज्ञानेन्द्र आर्य मंत्री जिला सभा गाजियाबाद ने की। कार्यक्रम की पूर्णाहुति पर सभामंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती का उद्बोधन हुआ और समाज के अधिकारी तथा कार्यकर्त्ताओं का मनोबल बढ़ाते हुए सभा की ओर से गरीब लोगों को कम्बल वितरण करने के लिए धन्यवाद दिया। आर्य समाज सदैव उपकार कार्य करता रहता है- अमरोहा, मुरादाबाद, लखनऊ कई स्थानों से कम्बल वितरण के समाचार प्राप्त हो रहे हैं। जिला संयोजक सत्यवीर चौधरी, सुभाष सिंघल, सुनील गर्ग, ओम प्रकाश आर्य, तेजपाल सिंह आर्य, श्रद्धानन्द शर्मा आदि आदि ने शोभा बढ़ाई, संयोजन मंत्री अखिलेश खरे ने किया और वेद प्रकाश तोमर प्रधान ने स्वामी जी का स्वागत किया तथा आर्य जनता का आभार व्यक्त किया।

म. रामसिंह आर्य की स्मृति में वेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज राजनगर गाजियाबाद के सदस्य श्री राजेन्द्र आर्य ने अपने पिता स्व. राम सिंह आर्य की स्मृति में प्रतिवर्ष १०-११ जनवरी को वेद पारायण यज्ञ का संकल्प लिया है इसी क्रम में इस वर्ष पं. वेद प्रकाश जी क्षोत्रिय वैदिक विद्वान ने ब्रह्मा पद स्वीकार किया। गुरूकुल गौतम नगर दिल्ली के ब्र. ने वेद पाठ किया। सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने वेद प्रवचन दिया। यज्ञ में नगर के आर्यो ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। बाद में प्रीतिभोज भी हुआ। परिवार के लिए शुभकामनायें एवं शुभाशीष दिये।

स्याना में स्वस्ति यज्ञ सम्पन्न

१७-१८ जनवरी को आर्य समाज स्याना के प्रधान श्री नरेन्द्र आर्य सुदेश आर्य ने अपने परिवार में स्वस्ति यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती रहे। वेद पाठ ब्र. ऋषभ शास्त्री श्री राम आर्य, अरविन्द आचार्य ने किया। नगर के सभी संभ्रांत लोग एवं आर्यो ने भाग लिया। पूर्णाहुति पर शिवकुमार शास्त्री, अरविन्द आचार्य का उद्बोधन हुआ। स्वामी जी ने वेदमंत्रों की व्याख्या से यज्ञ का महत्व बताया। ऋषिदेव आर्य यजमान रहे। माता सुदेश आर्या ने गीत सुनाये। ऋषिपाल सिंह ऋषिढेरी नगर पालिका अध्यक्ष की उपस्थिति से भी शोभा बढ़ी, सभी ने आहुतियां प्रदान की। नरेन्द्र आर्य ने सभी को धन्यवाद दिया।

सम्भल में हुआ वेदपारायण यज्ञ

१७-१८-१६ जनवरी २०१५ को मुरादाबाद के निकट नवीन जिला सम्भल में आर्य समाज सम्भल के पूर्व प्रधान प्रदीप आर्य (प्रताप) के आवास पर वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। स्वा. ब्रह्मानन्द जी वेदभिक्षु बरेली ब्रह्मा रहे। पं. योगेश दत्त आर्य बिजनौर के भजन हुए और कन्या गुरूकुल नजीबाबाद की छात्राओं ने मधुर वेद पाठ किया। पूर्णाहुति पर मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती पधारें उन्होंने यज्ञ की आत्मा यज्ञ की प्राण और यज्ञ के सार की व्याख्या की। महर्षि दयानन्द सरस्वती का महान उपकार स्मरण कराते हुए यज्ञ परम्परा से जुड़ने का आह्वान किया। सभा प्रधान जी की ओर से भी शुभ कामनायें प्रकट की। यज्ञ में अमरोहा, चन्दौसी, बाहजोई, मुरादाबाद तथा दूर दूर से आकर आर्यो ने आहुतियां दी। प्रीतिभोज की भी व्यवस्था रही। आर्य समाज का अच्छा प्रभाव रहा। प्रदीप आर्य जी के लिए शुभाशीर्वाद।

मकर संक्रान्ति पर विशेष यज्ञ

आर्य समाज गुरूकुल पूठ के माध्यम से गुरूकुल की पवित्र यज्ञशाला में वैदिक पर्व पद्धति के आधार पर यज्ञ सम्पन्न हुआ। दिल्ली से पधारें आचार्य रमेशचन्द्र शास्त्री एवं आचार्य राजेन्द्र शर्मा के निर्देशन में यज्ञ हुआ। यजमान सुशील कुमार जी अग्रवाल रहें। गुरूकुल के ब्र. एवं आचार्य कुलदीप, अरविन्द आचार्य, ऋषभ आचार्य, प्रदीप शास्त्री ने वेदपाठ किया। श्री राम आर्य ने भजन सुनाये। आचार्य राजीव जी प्रधान आर्य समाज ने अतिथियों का स्वागत किया। स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने भी यज्ञ में भाग लेकर आहुति प्रदान की तथा अपना उद्बोधन प्रदान किया। सुशील अग्रवाल जी ने छात्रों को मिठाई बांटी और गौओ को भी गुड़ खिलाया। पुनः सभी ने खिचड़ी का सहभोज प्राप्त किया।

दिनेश कुमार आर्य
मंत्री आर्य समाज

शोक संवेदना

आर्य समाज गढ़मुक्तेश्वर के पूर्व प्रधान ब्रजभूषण जी आर्य की धर्मपत्नी का निधन अचानक हृदयगति रूकने से हो गया। सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने परिवार में जाकर शोक संवेदना सभा की ओर से व्यक्त की। राजपाल शास्त्री जी ने यज्ञ सम्पन्न कराया। क्षेत्र के आर्यो ने यज्ञ में भाग लिया। अशोक आर्य, प्रधान महेन्द्र आर्य मंत्री, अनिल आर्य जिला उप प्रधान, ताराचन्द्र आर्य, रामौतार आर्य, नीरज आर्य आदि आदि सभी आर्यो ने आहुतियां प्रदान की। आर्य मित्र परिवार की ओर से शोकाकुल परिवार के प्रति सद्भावनायें।

●●●

गाजियाबाद जिले के ग्राम सादतनगर इकला निवासी श्री प्रेम सिंह आर्य महाशय जी की माता का स्वर्गवास हो गया जिसे सुनकर क्षेत्र के सभी आर्यो ने मिलकर वैदिक रीति से अन्तेष्टि संस्कार सम्पन्न किया। उसके पश्चात सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने भी परिवार में शोक संवेदना व्यक्त की और शान्ति यज्ञ किया। १८ तारीख में पूरे क्षेत्र से आर्यो ने शान्ति यज्ञ में भाग लिया। प्रेम सिंह आर्य एक सिद्धान्तनिष्ठ आर्य हैं याज्ञिक परिवार है दो पुत्रियां गुरूकुल में पढ़ी हैं सम्प्रति वेद प्रचार में संलग्न है। आर्य मित्र परिवार एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की ओर से शोक संवेदना व्यक्त की जाती है।

●●●

आर्य समाज ततारपुर के प्रधान एवं जिला सभा हापुड़ के उप प्रधान गुरूकुल ततारपुर के प्रबंधक ओमदत्त आर्य के पूज्य पिता श्री ओंकार सिंह जी की पुण्य स्मृति में वृहद यज्ञ का आयोजन किया गया- गुरूकुल के ब्र. ने वेद पाठ किया। शिव कुमार शास्त्री जी का दिव्य प्रवचन हुआ। सभी आर्य सदस्यों ने उसमें भाग लिया।

●●●

आर्य समाज सीतादई के प्रधान जगवीर सिंह आर्य ने बताया कि मासिक सत्संग श्री आशाराम आर्य भजनोपदेशक के सुपुत्र प्रदीप आर्य के घर आयोजित किया गया। गुरूकुल पूठ से आचार्य अरविन्द आर्य ने यज्ञ के पश्चात् प्रवचन किया। आर्य जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

रणधीर कुमार शास्त्री
वेद प्रचार अधिष्ठाता

आर्य समाज लल्लापुर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज लल्लापुर वाराणसी का वार्षिक सम्मेलन १६-२१ दिसम्बर को उत्साहपूर्वक मनाया गया। सत्यपाल जी सरल देहरादून एवं माधुरी रानी, स्वामी राजेन्द्र सरस्वती, डा. प्रशस्यमित्र शास्त्री, सरस्वती आचार्या तथा सभामंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने सम्मेलन का ध्वजारोहण कर उद्घाटन किया तथा अपना उद्बोधन दिया। स्वामी जी का इस समाज से बहुत पुराना सम्बन्ध है पुरानी स्मृतियां सुनाकर लोगों को भाव विभोर कर दिया। मंत्री संतोष आर्य ने संयोजन किया- बुद्धदेव आर्य, संरक्षक- दिनेश आर्य, प्रमोद आर्य, विजय आर्य, रवि आर्य, प्रकाश नारायण शास्त्री, बेचन सिंह आर्य मिर्जापुर ने भी कार्यक्रम में भाग लिया और शोभा बढ़ाई। महिला सम्मेलन प्रभावशाली रहा। गोष्ठी का भी आयोजन हिन्दी विषय पर हुआ। प्रधान श्री अनन्तलाल जी ने सभी का धन्यवाद किया।

बेचन सिंह आर्य
उप प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा

thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९८३७४०२१९२, सम्पादक-९५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सुन्दरगढ़ जिले के गेलेईबाहाल ग्राम के १२० परिवारों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली

पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी संचालक गुरूकुल आमसेना एवं प्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा एवं सहयोग से १४ दिसम्बर को गेलईबाहाल ग्राम में वैदिक धर्म की दीक्षा के भव्य कार्यक्रम में १२० परिवारों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ग्रहण की।

आ रंजीत जी विवित्सु

गुरूकुल आश्रम आमसेना की ओर से सोनाबेड़ा अभयारण्य के निर्धन वृद्ध आदिवासी महिला एवं पुरूषों को कम्बल बांटे गये

गत २२-२३ दिसम्बर को गुरूकुल आश्रम आमसेना के संचालक पूज्य धर्मानन्द जी सरस्वती गुरूकुल के ब्र कृष्णदव, ब्र केशव एवं कु धनेश्वरी, कु सुमेघा को साथ लेकर गये सोनीबेड़ा अभ्यारण्य के निर्धन स्त्री एवं पुरूषों को कई ग्रामों में कम्बल बांटे गये।

आ मनुदेव वाग्मी

पीपल्दा (कोटा) में वेद प्रचार संगोष्ठी सम्पन्न

युवा वर्ग वेदों से जुड़े-आचार्य अग्निमित्र शास्त्री

पीपल्दा (कोटा) आज युवा वेदों से जुड़े और संस्कृति संरक्षण का कार्य करें। यह विचार आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने कोटा के ग्राम पीपल्दा में आयोजित युवा संगोष्ठी में व्यक्त किए।

अरविंद पाण्डेय
प्रधान ९४६०४९४६५४

इटावा (कोटा) में संगीतमय वेदकथा एवं राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ सम्पन्न

कोटा महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति आर्य समाज कोटा द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में वेद प्रचार कार्यक्रम के तहत कोटा जिले के इटावा कस्बे में दो दिवसीय संगीतमय वेदकथा (वेद प्रवचन) तथा ग्यारह कुण्डीय राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ दिनांक २७-२८ दिसम्बर को सम्पन्न हुआ।

अरविन्द पाण्डेय
प्रधान

सूचना

आर्य समाजें श्री कनक देवार्य योगाचार्य को अपने उत्सवादि में बुलाने के लिये आर्य प्रतिनिपधि सभा उ०प्र० को लिखें। उनकी अधोलिखित पुस्तकें भी पढ़कर ज्ञान प्राप्त करें।

कनक देवार्य योगाचार्य की निम्नलिखित कुछ पुस्तकें

१- पावन वेद कथा ११ भागों में
२- सत्यार्थ प्रकाश की कथा १४ पुस्तकों में
३- गीता के कवितार्थ गीत ६ पुस्तकों में
४- वाल्मीकि रामायण २ खण्डों में
५- महाभारत गीतार्थ ५ पर्वो में
६- भर्तृहरि वैराग्य १ भाग
७- चूड़ापत हाड़े रानी १ भाग
८- किरणमई क्षत्राणी १ भाग
९- श्री कृष्ण सुदामा १ भाग
१०- नर सुल्तान कवर निहावदे १ भाग
११- पृथ्वीराज गौरी इतिहास
१२- श्री मह्यानन्द चालीसी २ भाग

इत्यादि पुस्तक कुल ५५ वर्षो में ७५ पुस्तकें लिखी हैं।

सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रसिद्ध भजनोपदेशक

पता-पं. तेजपाल सिंह आर्य, भजनोपदेशक
श्रीमती आशा आर्या, भजनोपदेशक
पता-आर्य समाज मन्दिर अमरोहा (उ.प्र.)
मो. ७५००७७३८०१
निवास-
०५६२२२६४७१६
नोट-कृपया इन्हें बुलाने के लिये २ माह पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ (उ.प्र.) सभा कार्यालय से सम्पर्क करने की कृपा करें।

सेवा में,
.....
.....
.....

भारत माँ की शान बढ़ाओ

पं. नन्दलाल निर्भय पत्रकार भजनोपदेशक

वीर शहीदों की कुर्बानी याद करो नौजवानों तुम।
भारत माँ की शान बढ़ाओ वीर बनो मर्दानों तुम।।

भारत के उन दीवानों ने भारी संकट झेले थे
भारत माँ की रक्षा हित खून की होली खेले थे।।
कभी मौत से नहीं डरे थे उन वीरों को जानो तुम।
भारत माँ की शान बढ़ाओ, वीर बनो मर्दानों तुम।।

सांगा अरू प्रताप, शिवा ने देश का मान बढ़ाया था।
बाबर, औरंगजेब दुष्ट अकबर का दम्भ मिटाया था।।
गोविन्द सिंह बन्दा नलुवा को ठीक तरह पहचानों तुम।
भारत माँ की शान बढ़ाओं वीर बनो मर्दानों तुम।।

तात्या टोपे, तुलाराम, नाना साहब, लक्ष्मीबाई।
देश धर्म हित अंग्रेजों से लड़े बहादुर बलदाई।।
जगत गुरू ऋषि दयानन्द के उपकारों को मानो तुम।
भारत माँ की शान बढ़ाओ, वीर बनो मर्दानों तुम।।

पंडित नंद किशोर गौड, मंगल पांडे थे वीर बड़े।
हंस हंस करके फांसी खाई, देश भक्त रणधीर बड़े।।
बनो लाजपत श्रद्धानन्द तुम, सुनो! देश दीवानों तुम।
भारत माँ की शान बढ़ाओ, वीर बनो मर्दानो तुम।।

बिस्मिल, शेखर, भगतसिंह ने भारी लड़ी लड़ाई थी।
देश धर्म पर भरी जवानी, खुश हो भेंट चढ़ाई थी।।
फैशन की दो होड़ छोड़ तुम, होश करो नादानों तुम।
भारत माँ की शान बढ़ाओ, वीर बनो मर्दानो तुम।।

भारत माँ की ललनाओं! पतिव्रता धर्म निभाओं तुम।
कौशल्या, सीता, सावित्री, अनुसुइया बन जाओ तुम।।
बनो देवकी, माता कुंती, ठान निराली ठानो तुम।
भारत माँ की शान बढ़ाओ, वीर बनो मर्दानो तुम।।

दुर्गा देवी किरण मई बन, रण में तेग बजाओ तुम।
देश द्रोही हत्यारों का, जग से नाम मिटाओं तुम।।
रेखा, हेमा, कैट, दीपिका, बनो न शायरा बानो तुम।
भारत माँ की शान बढ़ाओ, वीर बनो मर्दानो तुम।।

वैदिक धर्मी बनो साथियों! भारी मौज उड़ाओगे।
अगर न दोगे ध्यान दोस्तो! फिर पीछे पछताओगे।।
"नन्दलाल निर्भय" जागो! इंसान बनो, इंसानों तुम।
भारत माँ की शान बढ़ाओ, वीर बनो मर्दानो तुम।।

आर्य समाज स्वाहेड़ी का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज स्वाहेड़ी बिजनौर का 33वां वार्षिकोत्सव दिनांक २८.१.१५ से ३.२.१५ तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ भी होगा। इस अवसर पर वैदिक विद्वानों एवं भजनोपदेशकों के उपदेश व भजनों से ज्ञानार्जन का सुयाग मिलेगा।

डा. विद्यासागर आर्य, प्रधान

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।